तालाब के मज़े

पढ़ना है समझना

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T SU

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – कृतिका एस. नरूला

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुज़हत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा शगुन ऑफसैट (प्रा.) लि., बी-3, सैक्टर-65, नोएडा 201301 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-881-2

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखकर और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के अनेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : *पी. राजाकुमार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *शिव कुमार*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *गौतम गांगुली*

तालाब के मज़े

काजल

माधव

काजल और माधव के गाँव में एक तालाब था।
दोनों तालाब पर रोज़ खेलने जाते थे।
उन्हें तालाब का पानी बहुत अच्छा लगता था।

एक दिन वे दोपहर को तालाब पर पहुँचे।
वहाँ बहुत सारे बगुले आए हुए थे।
तालाब सफ़ेद बगुलों से भरा हुआ था।

काजल और माधव इतने सारे बगुले देखकर खुश हो गए।
दोनों कूद-कूद कर बगुलों के बीच भागे।
दोनों ने बगुलों को पकड़ने की कोशिश भी की।

अगले दिन मोनी भी उनके साथ तालाब पर आ गई।
मोनी बगुलों पर भौंकने लगी।
काजल ने उसको प्यार से चुप कराने की कोशिश की।

लेकिन मोनी भौंकती ही रही।
वह दौड़कर बगुलों पर झपटी।
काजल ने उसे गोद में उठा लिया।

माधव और काजल उसको घर छोड़ने चल दिए।
तालाब के उस तरफ़ उन्हें कुछ घोंसले दिखे।
बगुलों ने तालाब के किनारे के पेड़ों पर घोंसले बनाए थे।

घोंसलों में तिनके,घास और पंख लगे हुए थे।
बगुलों के घोंसलों में अंडे भी थे।
काजल और माधव दूर से अंडों को देखते रहे।

दोनों रोज़ अंडों को देखने लगे।
हर एक घोंसले में तीन या चार अंडे थे।
अंडे हल्के नीले रंग के और छोटे-बड़े थे।

थोड़े दिनों बाद कुछ अंडों का रंग मटमैला हो गया।
उनमें से छोटे-छोटे बगुले निकल आए।
छोटे बगुले आवाज़ निकालते और पंख फड़फड़ाते थे।

बगुले अपनी चोंच में उनके लिए खाना लेकर आते।
वे बच्चों की चोंच में खाना डालते थे।
काजल और माधव को यह देखने में मज़ा आता था।

छोटे बगुले अब घोंसलों से बाहर भी आते थे।
तालाब के किनारे खूब सारे छोटे-छोटे बगुले दिखने लगे।
काजल और माधव छोटे बगुलों के पीछे भागते।

धीरे-धीरे छोटे बगुले बड़े होने लगे।
वे बड़े बगुलों के साथ तालाब में भी बैठने लगे।
वे तालाब में मछली और मेंढ़क भी पकड़ने लगे थे।

एक दिन सारे बगुले वापस अपने घर चले गए।
काजल और माधव ने सबको उड़कर जाते हुए देखा।
उन्हें पता था कि बगुले अगले साल फिर आएँगे।

उस दिन मोनी फिर तालाब पर आ गई।
काजल ने उसे भगाया नहीं।
मोनी उन दोनों के साथ ही घूमती रही।

तभी उनकी नज़र तालाब में नहाती भैंसों पर गई।
काजल और माधव भैंसों पर जाकर बैठ गए।
दोनों ने भैंसों की पीठ पर चॉक से अपना नाम भी लिखा।

काजल और माधव की और कहानियाँ

स्तर 1
स्तर 2
स्तर 3
स्तर 4

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

2080

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-881-2